

स्नातक उपाधि प्रतिष्ठा (सी.बी.सी.एस)  
बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी  
(BAHDH)

सत्रीय कार्य  
(जुलाई 2025 और जनवरी 2026 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-109  
हिंदी उपन्यास



मानविकी विद्यापीठ  
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

**हिंदी उपन्यास  
(BHDC- 109)  
सत्रीय कार्य**

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.-109 / 2025-2026

आपको प्रेमचंद पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.सी.-109 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 तथा 2 पर आधारित है।

**उद्देश्य :** शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको प्रेमचंद तथा उनके साहित्य से अवगत कराना है। प्रेमचंद ने कथा साहित्य के साथ-साथ निबंध, नाटक आदि की भी रचना की है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से आप प्रेमचंद के कथा साहित्य, नाटक एवं निबंध से परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको प्रेमचंद के साहित्य के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

**निर्देश :** सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

- 1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
- 2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
- 3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

**सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश**

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य प्रेमचंद और उनके साहित्य के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।
2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न पाठ्यक्रम में अध्ययन कराए जा रहे प्रेमचंद के साहित्य के अंश दिए गए हैं, जिनकी संदर्भ सहित व्याख्या करनी है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी प्रेमचंद के साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप प्रेमचंद के उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबंध के अंशों की व्याख्या-विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।
3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास अवश्य जमा करा दें।

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :

- दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर
- जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 30 अप्रैल

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। विषय संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले आपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
- ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
- घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
- ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

**हिंदी उपन्यास  
(BHDC- 109)  
सत्रीय कार्य**

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी-109  
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी-109/टीएमए/2025-2026  
कुल अंक 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**भाग-क**

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **10×4 = 40**

- (क) एक पूरा मकान बर्तन से भरा हुआ है। चाय के सेट हैं, नाश्ते की तश्तरियाँ थाल, लोटे, गिलास। जो लोग नित्य खाट पर पड़े हुक्का पीते रहते थे, बड़ी तत्परता से काम में लगे हुए हैं। अपनी उपयोगिता सिद्ध करने का ऐसा अच्छा अवसर उन्हें फिर बहुत दिनों के बाद मिलेगा। जहाँ एक आदमी को जाना होता है, पाँच दौड़ते हैं। काम कम होता है, हुल्लड़ अधिक। जरा-जरा-सी बात पर घण्टों तर्क-वितर्क होता है और अन्त में वकील साहब को आकर निर्णय करना पड़ता है।
- (ख) मैं आठवीं क्लास में पढ़ता था। तब मैं क्या समझता हूँगा, क्या नहीं समझता हूँगा। फिर भी वह बातें मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं मालूम हो रही थीं। जी में कुछ बेमतलब गुस्सा चढ़ता आता था। जी होता था कि वहीं के वहीं कोई दुस्सह अविनय कर डालूँ। ऐसे भाव की कोई वजह न थी, पर बाबू जी की कुछ दबी हुई स्थिति की झलक उनके चेहरे पर देखकर बड़ी खीझ मालूम हो रही थी, पर जाने मुझे क्या चीज रोक रही थी कि मैं फट नहीं पड़ा।
- (ग) तुलसी ने सीढ़ियाँ पार कीं, ड्योढ़ी, बगीचा और फाटक पार किया, बाहर निकल आए। सड़क पर कुछ दूर जाकर उन्होंने एक बार और उस घर पर दृष्टि डाली। लगा कि जैसे जीव का अपने एक जन्म से साथ छूट रहा हो। मन अब भी सब कुछ वही चाहता है, किंतु ज्ञान यथार्थ-बोध कराता है। जो मनुष्य बनकर जन्मता है उसके मन को यह हक है कि वह असंभव से असंभव वस्तु की चाहना भी कर ले, पर उसे पाने की शक्ति और औचित्य के बिना क्या वह हक यथार्थ है ? अपनी परिस्थितियों पर विचार न करनेवाला व्यक्ति मूर्ख होता है।
- (घ) बंटी अपने घर में घूम रहा है। पर अपने घर जैसा कुछ भी तो नहीं लगा रहा उसे। सर्दी के दिनों में सांझ से ही तो चारों ओर अँधेरा घुसने लगता है। और जैसे-जैसे अँधेरा घुलता जा रहा है, सब कुछ और ज्यादा-ज्यादा अपरिचित होता जा रहा है। यहाँ तो आसमान भी पहचाना हुआ नहीं लगता, हवा भी पहचानी हुई नहीं लगती। अपने घर का आसमान और अपने घर की हवा कहीं ऐसी होती है?

**भाग-ख**

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 750-800 (प्रत्येक) शब्दों में दीजिए। **15×3 = 45**

- (1). हिन्दी उपन्यास के विकास पर प्रकाश डालिए।
- (2). 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।
- (3). 'मृगनयनी' के परिवेश के विविध पक्षों पर विचार कीजिए।

**भाग-ग**

3. निम्नलिखित पर लगभग 250 (प्रत्येक) शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5×3 = 15**

- (1) प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास
- (2) 'आपका बंटी' के सहायक चरित्र
- (3) 'मानस का हंस' की भाषा और शैली